10th CBSE (SESSION : 2015-16)
SUBJECT : HINDI(B)
SUMMATIVE ASSESSMENT-II
SOLUTION _SET-2_CODE NO. 4/2

खण्ड–(क)

1. (क) जिस प्रकार नदियों में उठने वाला पानी का भँवर नदी में हलचल उत्पन्न कर देता है, उसी प्रकार स्मृतियाँ भी जीवन में आकर जीवन में हलचल कर देती हैं। वर्तमान जीवन की परिस्थितियाँ, व्यथा, आदि बेचैन कर देती है।

(ख) जिस प्रकार दुश्मन हर समय व्यक्ति को नुकसान, तकलीफ पहुँचाने के के लिए समय का इंतजार करता हुआ, तैयारी में रहता है उसी प्रकार यादें भी वर्तमान जीवन को घाव देती हुई लौट आती है। इसलिए यादों को जानी–दुश्मन के समान माना है।

(ग) शरीर में धँसा हुआ काँच शरीर से रक्त निकलने तथा दर्द का एहसास करवाता है, उसी प्रकार यादें भी बीती हुई, दर्द भरी घटनाओं से परिचित करवाती हुई वर्तमान जीवन में हलचल पैदा करती हैं।

(घ) भूतकाल में बीते हुए समय तथा यादों में कुछ भी परिवर्तन किया जाना संभव नहीं है। स्मृतियाँ स्थायी नहीं रहती हैं। उसके बारे में कुछ भी कहना न्याय के सामने खड़े करने जैसा हैं।

2. (i) जब व्यक्ति भावों को व्यक्त करता हुआ केवल बोलता ही रहता है। वह दूसरों को बिल्कुल भी सुनना नहीं चाहता है इस प्रकार अधिक बोलने की कला, अनसुना करने की कला में विकसित हो जाती है।

(ii) अधिक बोलने वाले अभिभावकों के कारण बच्चों के मन में सही–गलत से जुड़ा स्वाभाविक ज्ञान कम विकसित हो पाता है क्योंकि अधिक बोलना बातों को विरोधाभासी तरीके से सामने रखता है, वह कुछ भी नहीं बोल पाता।

(iii) अधिक बोलना इन बातों का सूचक है कि व्यक्ति स्वयं के बारे में ज्यादा सोचता है तथा दूसरों के बारे में कम।

(iv) अमेरिका के सर्वाधिक चर्चित राष्ट्रपति रूजवेल्ट अपने माली तक के साथ कुछ समय व्यतीत करते तथा उसकी अधिक से अधिक बातों को सुनने की कोशिश करते। यही उनकी लोकप्रियता का कारण बताया है।

(v) ''हम सुनना चाहते ही नहीं'' अर्थात इस पंक्ति का आशय है कि हम लोग केवल बोलना चाहते है ; जिससे कि लोग हमारी बातों को बेहतर तरीके से समझेंगे। बातें कोई भी हो, हम उनकी बातो को अनसुना कर लगातार बोलते हुए उन पर हावी होना चाहते हैं।

(vi) महात्माओं व विद्वानों की सबसे बड़ी विशेषता है– ''दूसरों की आवाज को ध्यान से सुनना। लेकिन यह सत्य है कि वर्तमान में हम केवल बोलना चाहते है। हम स्वयं के बारे में अधिक सोचते हैं, दूसरों के बारे में कम। इसलिए हमें दूसरों की बातों को भी ध्यान पूर्वक सुनना चाहिए, यही लोकप्रियता का सूचक है।

खण्ड–(ख)

3. (i) वर्णों का सार्थक, व्यवस्थित तथा क्रमबद्ध समूह शब्द कहलाता है। जब तक वह व्याकरण के नियमों से युक्त नहीं होता तब तक कोई भी शब्द स्वतंत्र रहता है। जैसे– राम, श्याम, मोहन, आगरा, ताजमहल आदि।

(ii) शब्द वाक्य में प्रयुक्त होने पर पद में परिवर्तित हो जाता है, क्योंकि वह व्याकरण के विभिन्न कारकों (लिंग,वचन,कारक) आदि से संबंधित होता है, इसलिए पद कहलाता हैं।

4. (i) मैंने एक बहुत बीमार व्यक्ति को देखा।
उ. मैंने एक व्यक्ति को देखा और वह बहुत बीमार था।
(ii) यद्यपि वह बहुत मेहनती है फिर भी सफल नहीं हो सका।
उ. मिश्र वाक्य
(iii) शरीर से कमजोर व्यक्ति के लिए यह प्रतियोगिता नहीं है।
उ. जो व्यक्ति शरीर से कमजोर है, उसके लिए यह प्रतियोगिता नहीं है।

5. (क) समास विग्रह कर समास का नाम लिखो।
(i) जनहित – जनता का हित (संबंध तत्पुरूष)
(ii) मधुरफल – मधुर (मीठा) है जो फल (कर्मधारय समास)

(ख) समस्त पद बनाकर समास का नाम लिखिए।
(i) स्वप्न देखने वाला : स्वप्नदर्शी (कर्मधारय समास)
(ii) अपनी रक्षा : आत्मरक्षा (अव्ययीभाव समास)

6. (क) एक कप गर्म चाय पी लो।
(ख) उससे हमारी बात हो गयी है।
(ग) यहाँ केवल दो पुस्तकें रखी हैं।
(घ) वह तुमसे भली भाँति परिचित है।

7. (i) पानी–पानी होना : शर्मिन्दा या लज्जित होना।
वाक्य में प्रयोग – पिताजी ने राम को स्कूल में सभी के सामने डाँटा या फटकारा तो राम पानी – पानी हो गया।

(ii) सिर पर कफन बाँधना :– प्रत्येक परिस्थिति या चुर्नातियों का सामना करने हेतु तैयार होना।
वाक्य में प्रयोग – कारगिल युद्ध में भारतीय सैनिक दुश्मनों से मुकाबला करने के लिए सिर पर कफन बाँध कर निकले हैं।

खण्ड–(ग)

8. (क) ऑचुमेलौव की दो चारित्रिक विशेषताएँ निम्न है–

(i) ऑचुमेलॉव स्वार्थी, चापलूस प्रवृत्ति का व्यक्ति था।

(ii) उसका स्वभाव गिरगिट की तरह बदलने वाला अर्थात परिस्थिति वश अपने विचारों पर कायम न रहने वाला या मुकरने वाला व्यक्ति था।

(ख) ''अब कहाँ दूसरे के दुःख से दुःखी होने वाले'' पाठ के आधार पर बताया है वर्तमान समय में समुद्र के क्षेत्र–विशेष में कमी या न्यूनता आना ही समुद्र के गुस्से का कारण था। समुद्र के जल–क्षेत्र में न्यूनता तथा समुद्र का सिकुड़ना दोनों ही इसके प्रमुख कारण रहे।

इसी कारण उसने अपना गुस्सा कुछ सालों पहले मुंबई में प्रदर्शित किया। समुद्र के किनारे बसी हुई बड़ी–बड़ी इमारतों को तहस–नहस कर दिया। उस समय पानी में चल रहे तीन जहाजों को वर्ली, गेट–वे ऑफ इंडिया जैसे– तीन अलग–अलग स्थानों पर फेंका, जो सैलानियों का नज़ारा बने।

(ग) सआदत अली अवध के नवाब आसिफउददौला का भाई था। वह ऐशो–आराम से जीने वाला तथा अंग्रेजों के पक्ष का व्यक्ति था। इसलिए कर्नल उसे अवध के तख्त पर बैठाना चहते थे ताकि अंग्रेजों का अवध पर भी आधिपत्य हो जावें।

9. लेखक यह कहना चाहता है कि सभी मनुष्यों के मन में पशुओं, पक्षियों, समुद्र, पहाड़ तथा प्रकृति के प्रति सम्मान का भाव उत्पन्न हो सके। प्राचीन समय में लोग स्वार्थ को भूलकर परोपकार को महत्व देते थे। जैसे पाठ में शेख अयाज़ के पिता, नूह नाम पैगम्बर, चींटीयों की रक्षा करते हुए सुलेमान तथा लेखक की माँ का जिक्र किया। इन्होंने किसी न किसी माध्यम से जीव–जंतुओं, पक्षियों प्रकृति के प्रति प्रेम व करूणा का भाव दर्शाया है।

लेकिन वर्तमान समय में दूसरों के दुःख से दुःखी होने वाले लोग बहुत कम मिलते हैं। पहले मनुष्य सारे संसार को एक परिवार के रूप में मानता था। खूले आँगन में रहता था। धीरे–धीरे स्वयं को सीमित दायरों में (छोटे–छोटे घरों, फ्लेट्स) कैद करना शुरू कर दिया है।

मनुष्य ने अपने नीजी स्वार्थ के कारण प्रकृति में दखल व खलल करना शुरू किया। वनों का दोहन भयंकर रूप से होने लगा। पशु–पक्षी बेघर होने लगे। बेवक्त की बरसातें तथा गर्मी की तीव्रता बढ़ने लगी। वर्तमान मनुष्य संपूर्ण रूप से स्वार्थ के वशीभूतहो गया है उसे दूसरों के दुख से कोई लेना–देना नहीं हैं।

10. (क) मनुष्य–जाति ने आज तक अपनी बुद्धि का प्रयोग अपने हित तथा स्वार्थ में किया है। उसने प्रकृति का अत्यधिक रूप में दोहन किया है। उसने नदी, समुद्र, वन, पहाड़, जीव–जन्तुओं, पक्षियों आदि से अधिक महत्व मनुष्य जाति को दिया है। उसने समुद्र की जगह हथियाई, जंगलों व पहाड़ों का काटा। नई–नई इमारते बनाकर अपनी बुद्धि से प्रकृति में बड़ी–बड़ी दीवारें खडत्री कर दी।

(ख) पहले मनुष्यों में परिवार की भावना थी। सभी एक–दूसरे को समान तथा आत्मीयता के साथ देखते थे। लेकिन अब मनुष्य स्वार्थ के वशीभूत होकर व्यक्तिगत जिंदगी जीने लगा है। स्वयं को छोटे–से दायरे में कैद कर लेना, छोटे–से घर में अपनी अलग खिचड़ी पकाना, तथा समाज से संबंध न रखना।

(ग) लेखक के अनुसार यह धरती किसी एक की नही है। बल्कि धरती पर सभी का समान रूप से अधिकार है। इस पर मानवों का ही नहीं अपितु पक्षी, पशु, नदी, पर्वत, समुद्र सभी का बराबर अधिकार है।

11. (क) बिहारी ने प्रभु की प्राप्ति में एकाग्रचित्त होकर, ध्यान–मग्न होकर बिना किसी बाहरी आडंबर के भक्ति करने वालों को साधक तथा मन का अस्थिर होकर, माला जपने, शरीर पर चंदन लगाने, माथे पर तिलक लगाने जैसे – साधनों को बाध ाक बताया है।

(ख) कवयित्री के लिए प्रभु ही सर्वस्व है, वे ही उसके जीवन के उद्देश्य के रूप में है अतः वह अपने ह्रदय में उस प्रभु के प्रति आस्था और भक्ति का भाव जगाए रखना चाहती है। इसलिए वह अपने आस्था रूपी दीपक को मधुरता, प्रसन्नता , निर्भयता, पूर्वक जलते रहने के लिए कह रही है।

(ग) ''कर चले हम फिदा'' गीत सन् 1962 में हुए भारत–चीन युद्ध की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधारित है। चीन ने तिब्बत की ओर से भारत पर आक्रमण किया। उस युद्ध में भारतीय सैनिकों ने कठिन परिस्थितियों में मुकाबला किया था।

12. 'आत्मत्राण ' कविता में कवि स्वयं अपने बल पर दुःखों को दूर कना चाहते हैं। वह दुःखों से मुक्ति नहीं चाहता, बल्कि दुखो को सहने तथा उबरने की आत्मशक्ति चाहता है।

हम दुखो को निड़र होकर सहन करें, उन पर विजय प्राप्त करें, आस्थावान बने रहें। हम दुखों से क्षुब्ध होकर टूटे न, रोए न , निराशावादी न बनें, परमात्मा के प्रति संदेह और क्षोभ से न भरे। सुख में भी परमात्मा को याद रखना, धन्यवाद देना तथा उनके प्रति विनय प्रकट करना न भूलें।

13. टोपी का लगाव इफ्फन की दादी से इसलिए था क्योंकि वह हर समय टोपी की सहायता करती, उसे कहानियाँ सुनाया करती थी। वह हमेशा टोपी का ही पक्ष लेती थी। दादी की भाषा व बोली टोपी को अच्छी लगती थी। वह भी उसी बोली में बोलने लगा था।

टोपी और इफ्फन की दादी अलग–अलग धर्म, जाति व मजहब के थे। मगर दोनो अटूट रिश्ते में बँधे थे। प्रेम किसी भी जाति या बंधन को नही मानता है। इफ़फन की दादी के आँचल में कहानियाँ सुनते हुए टोपी अपने दुख–दर्द, अकेलेपन को भूल जाता था। दादी को भी टोपी के साथ अपनेपन या आत्मीयता का एहसास होता था।

खण्ड–(घ)

14. **(स्व विवेक व ज्ञान के अनुसार हल करना है।)**

15. बी–357, शास्त्रीनगर
भरतपुर, (राज.)
08 मार्च, 2016
सेवा में,
श्रीमान् प्रबन्धक महोदय,
नेशनल बुक ट्रस्ट,
जयपुर (राज.)

विषय–हिन्दी भाषा में नवीनतम बाल साहित्य की पुस्तकें भेजने हेतु।
महोदय
उपयुक्त विषयान्तर्गत आपसे अनुरोध है कि मैं नियमित रूप से आपके ट्रस्ट से पुस्तकें मँगवाता रहता हूँ। मुझे हिन्दी में प्रकाशित नवीनतम् संस्करण वाली बाल–साहित्य से संबंधित पुस्तकों की आवश्यकता है ; अतः भेजने की कृपा करें। कटी–फटी होने पर पुस्तके लौटा दी जाएगी, जिनके व्यय–भार का उत्तर दायित्व आपका होगा।
भवदीय
राहू शर्मा

16. **सवांद का वर्णन (स्व विवेक व ज्ञान के अनुसार हल करना है।)**

17.

दिशा डेल्फी ग्लोबल सीनियर सैकण्डरी स्कूल, कोटा (राजस्थान)
''वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन''

दिनांक : 08 मार्च 2016 **सूचना**

विद्यालय के सभी विद्यार्थियों का सूचित किया जाता है कि दिनांक 10 मार्च 2016 जूनियर व सीनियर विद्यार्थियों के लिए हिन्दी वाद–विवाद प्रतियोगिता का दो अलग–अलग स्तर पर आयोजन किया जा रहा है। जो भी विद्यार्थी भाग लेना चाहता है, वह अपना नाम कक्षाध्यापक को लिखवा दें।
प्रथम पुरस्कार 2500 , द्वितीय पुरस्कार 1500, तृतीय पुरस्कार 1000 तथा अन्य प्रतिभागियों को प्रशंसा पत्र प्रदान किए जाऐंगे।

आज्ञा से
सुरेश गोयल
सचिव साहित्य क्लब

18.

विज्ञापन
''मकान बेचना है''

– मकान का क्षेत्रफल 1000 वर्गफुट।
– 4 बी.एच.के., तथा संपूर्ण फर्नीचर युक्त।
– यातायात संबंधी सुविधा, विद्यालय, पार्क, पार्किंग की सुविधाओं से युक्त।
– नल व बिजली 24 घंटे उपलब्ध।
– मकान की लागत 35 लाख लगभग।

इच्छुक व्यक्ति नीचे दिए हुए पते पर संपर्क करें : –
बी–357 , महावीर नगर तृतीय, सेक्टर–7 कोटा (राज.)